

हरिश्चन्द्र

संख्या ५७७

₹१०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

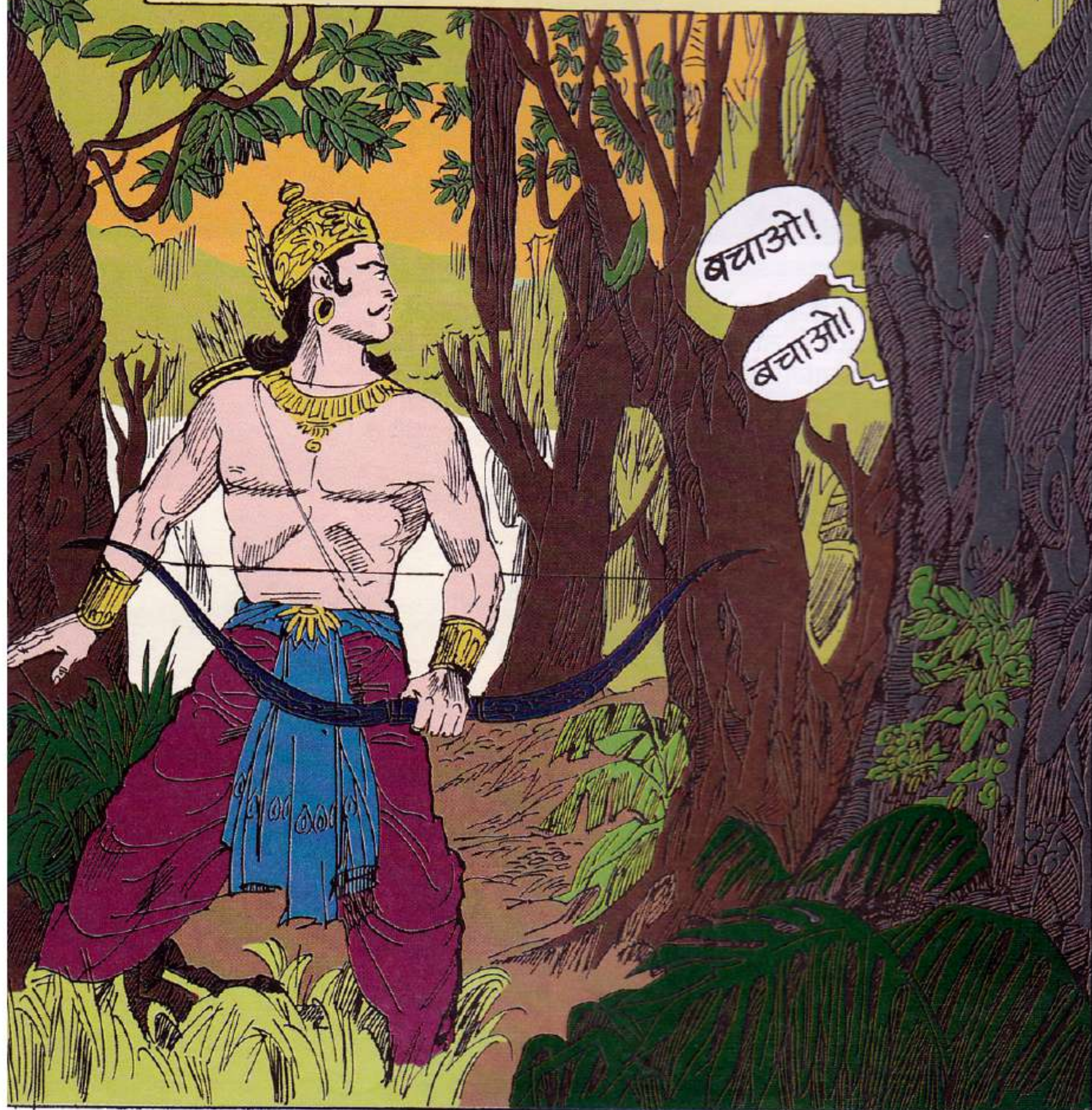
कथा	चित्र	संपादक	मुखपृष्ठ
कमला चन्द्रकांत	सोरेन राय	अनंत पै	प्रताप मुलिक

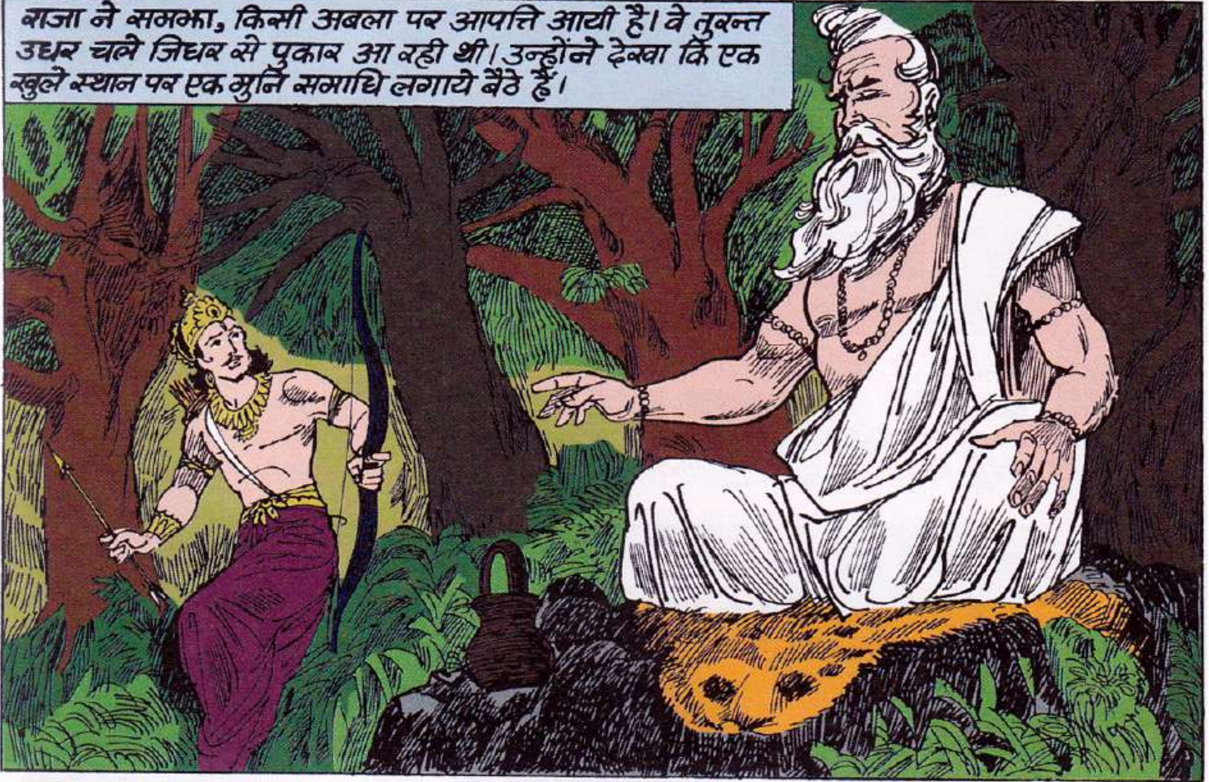
Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-271-7
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

हरिश्चन्द्र

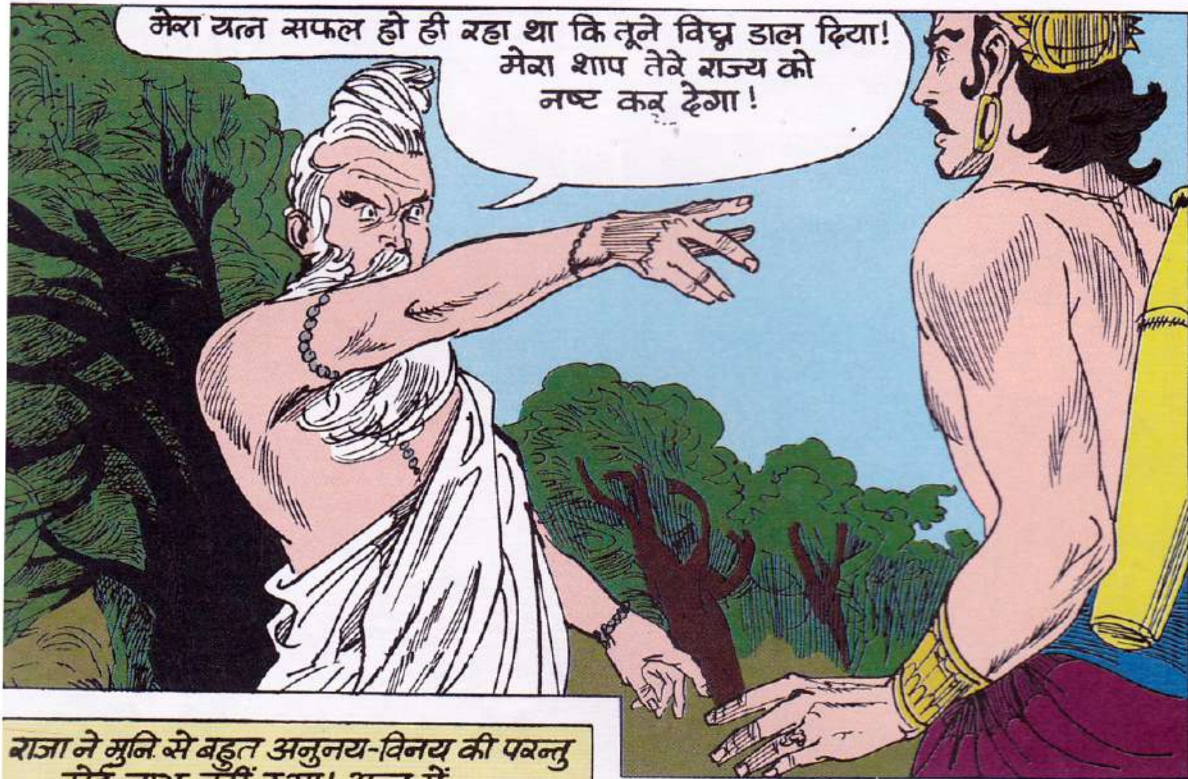
त्रेतायुग में अयोध्या में राजा हरिश्चन्द्र राज करते थे। वे बड़े धर्मात्मा थे। सारी प्रजा उन्हें चाहती थी और उनका मान करती थी। एक दिन वे शिकार के लिए जंगल में गये। वहाँ उन्हें किसी की पुकार सुनायी दी...



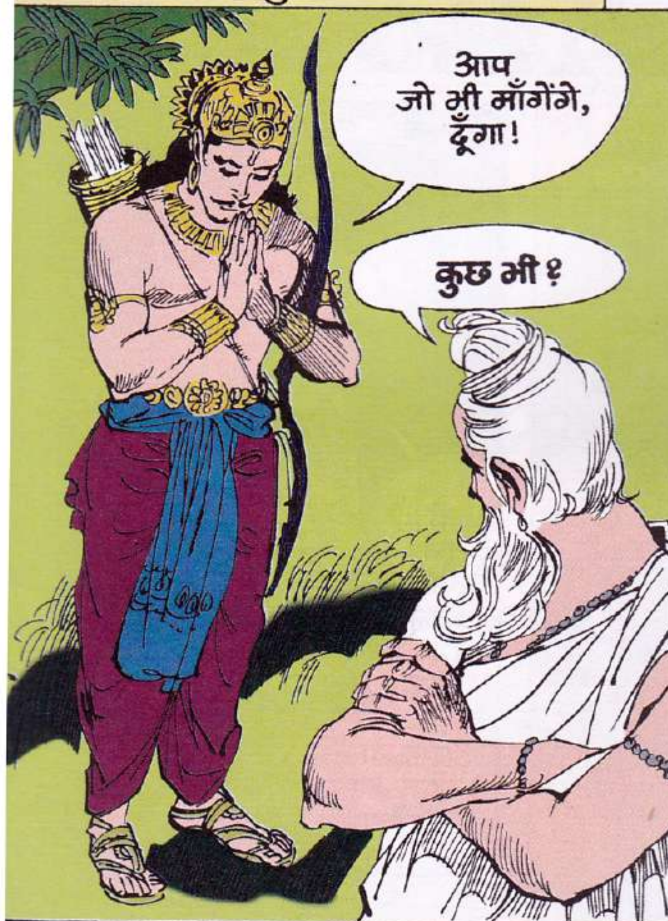

राजा ने समझा, किसी अबला पर आपत्ति आयी है। वे तुरन्त उधर चले जिधर से पुकार आ रही थी। उन्होंने देखा कि एक खुले स्थान पर एक मुनि समाधि लगाये बैठे हैं।


यह मैंने क्या किया? ये तो मुनि विश्वामित्र हैं! अब मैं क्या करूँ?

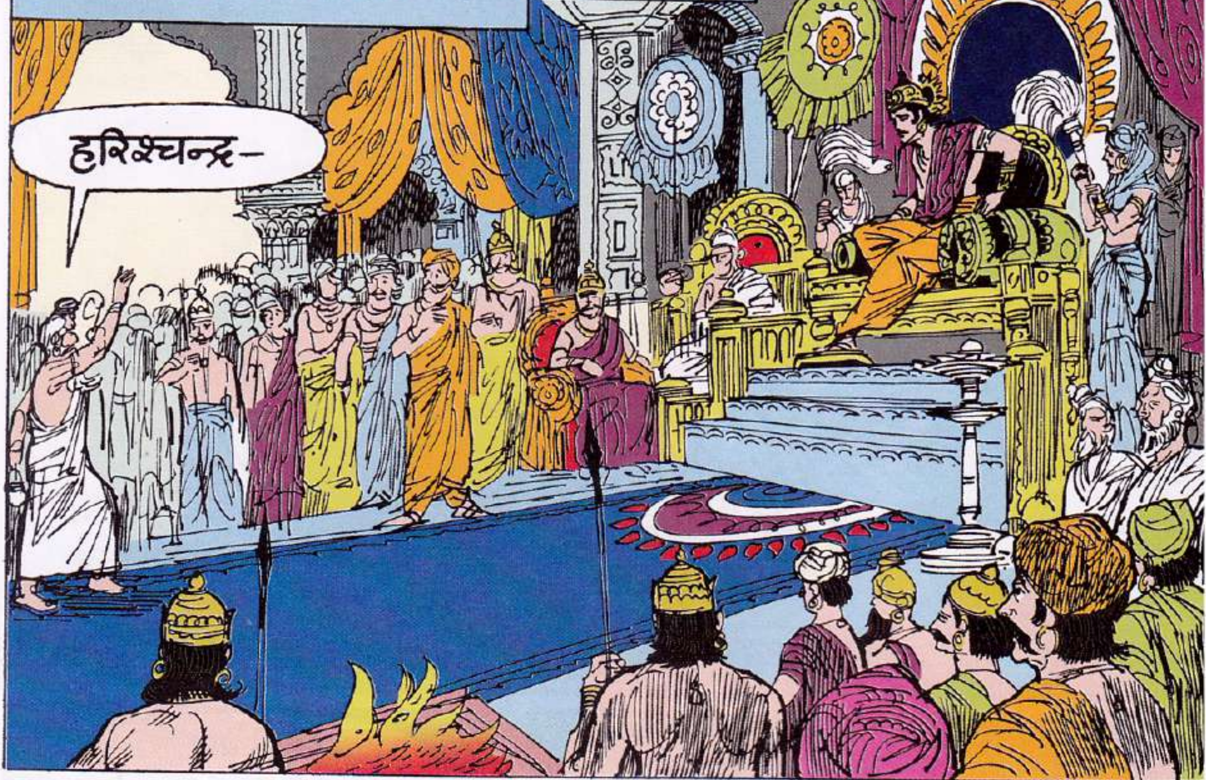

मुनिवर, मुझे बहुत खेद है कि मैंने आपका ध्यान भंग कर दिया! मैंने किसी की पुकार सुनी थी!
वह उन विज्ञानों की आत्मा की पुकार थी जिन्हें मैं अपने वश में कर रहा था!



राजा ने मुनि से बहुत अनुनय-विनय की परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में–





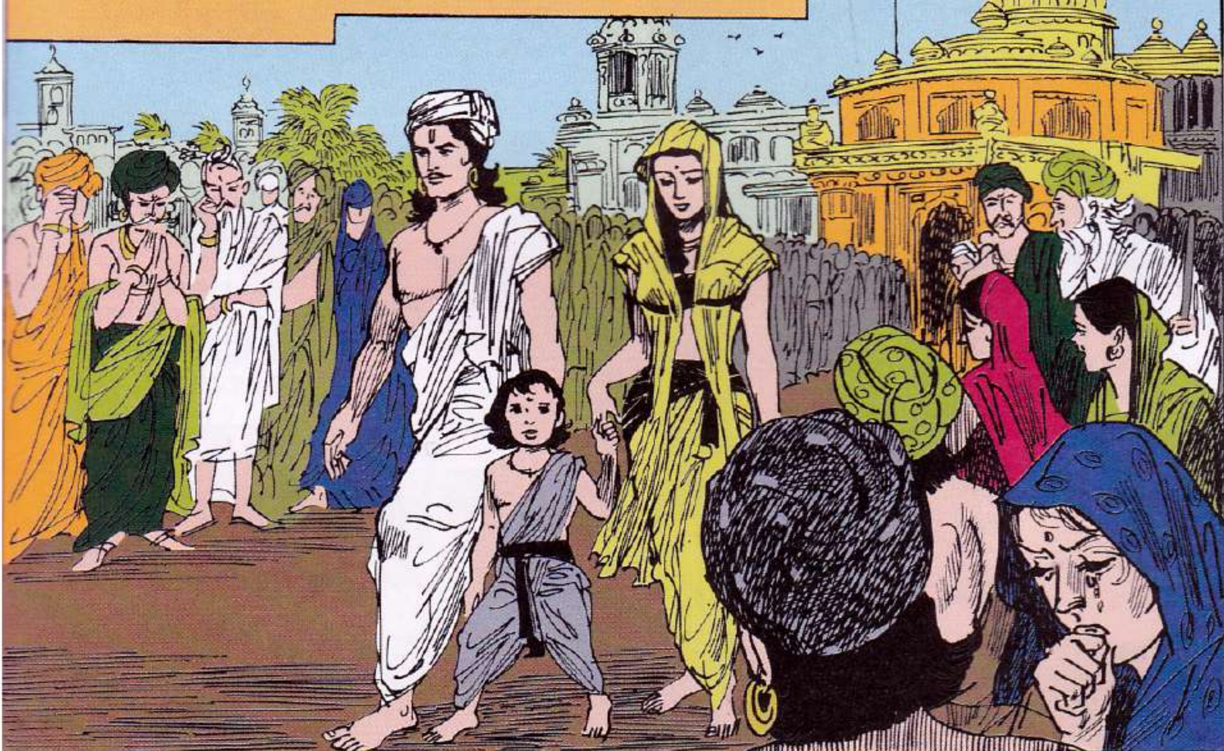

कुछ दिन बाद... राजा हरिश्चन्द्र सिंहासन पर बैठे थे...
अचानक एक तेज़ आवाज़ सुनायी दी...
हरिश्चन्द्र–


विश्वामित्र को आता देख राजा घबरा उठे।
मैं आज तेरा वचन पूरा करवाने आया हूँ! अपना राज्य मुझे दे दे।
मेरा राज्य ?


हाँ। तूने अपना वचन पूरा न किया तो अयोध्या को मेरा शाप लगेगा!


सारे मंत्री स्तब्ध रह गये! राजा मुनिवर को अन्दर ले गये।
मैं अपना राज्य आपको देता हूँ।


मंत्रियों ने राज्य दान करने वाले राजा को समझाया।
महाराज, आप इस प्रकार राजपाट कैसे त्याग सकते हैं?
मैंने अपना वचन भंग किया तो प्रजा पर आपत्ति आ जायेगी।


राजपाट छोड़ कर राजा, महारानी शैब्या तथा राजकुमार रोहिताश्व के साथ नगर से चल दिये। तीनों को जी-जान से चाहने वाले नगरवासी उन्हें जाते देख रोने लगे।

कुछ दूर चलने के बाद, हरिश्चन्द्र को किसी की आवाज़ सुनायी दी। उन्होंने घूम कर देखा। मुनि विश्वामित्र चले आ रहे थे।

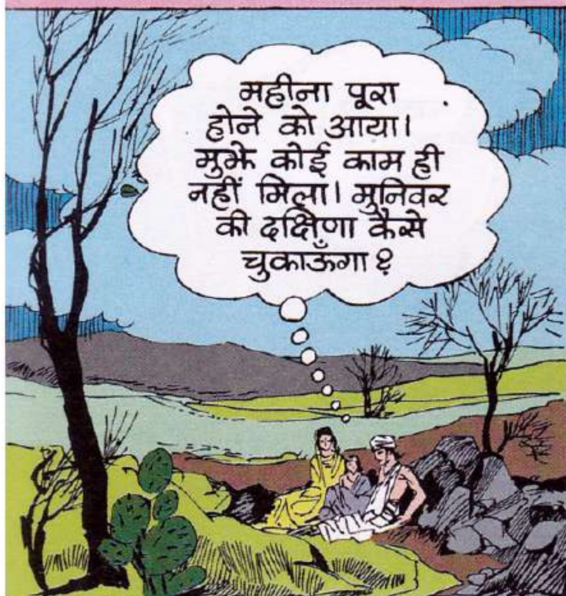


दान के साथ दक्षिणा भी दी जाती है। राजा हरिश्चन्द्र तो अपना सब-कुछ दान कर चुके थे– दक्षिणा देने को उनके पास कुछ नहीं बचा था!





राजा, रानी और राजकुमार रोहिताश्व देश-देश में जंगल और रेगिस्तान की खाक छानते हुए बहुत दूर चले गये–

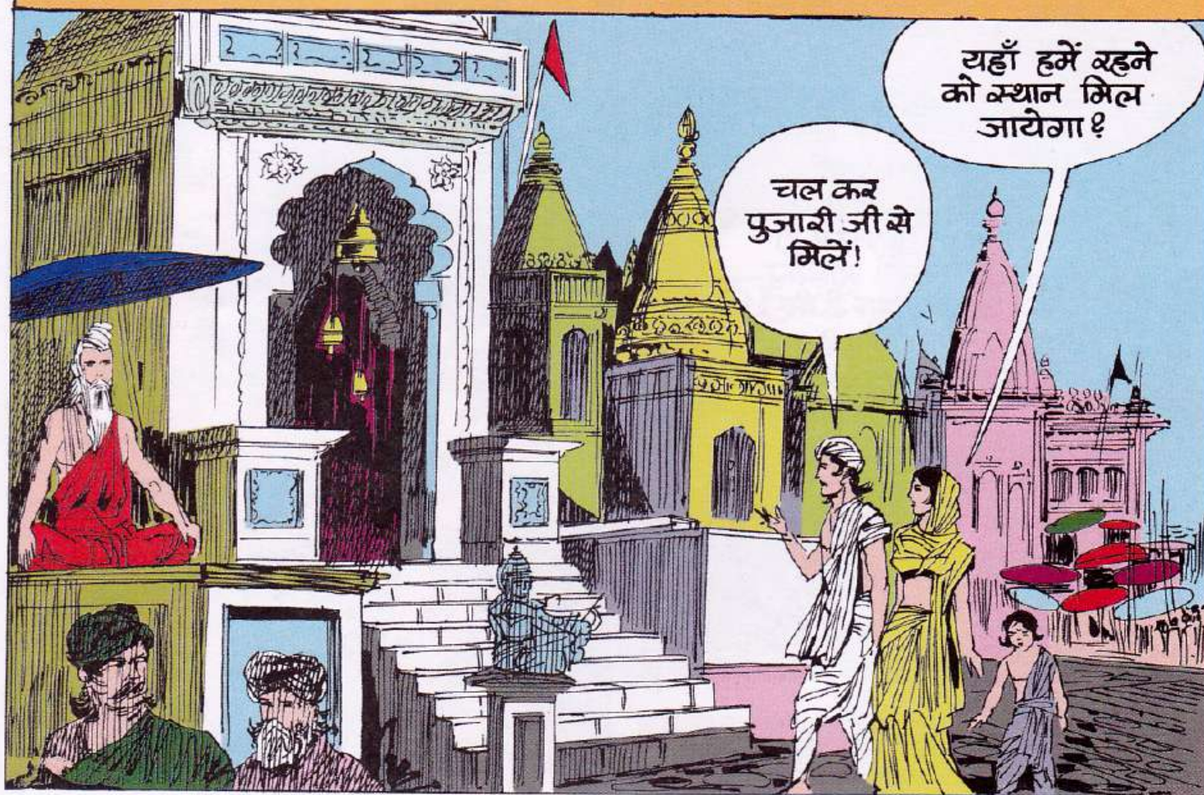




घूमते-घूमते वे मन्दिरों के नगर, वाराणसी पहुँचे।

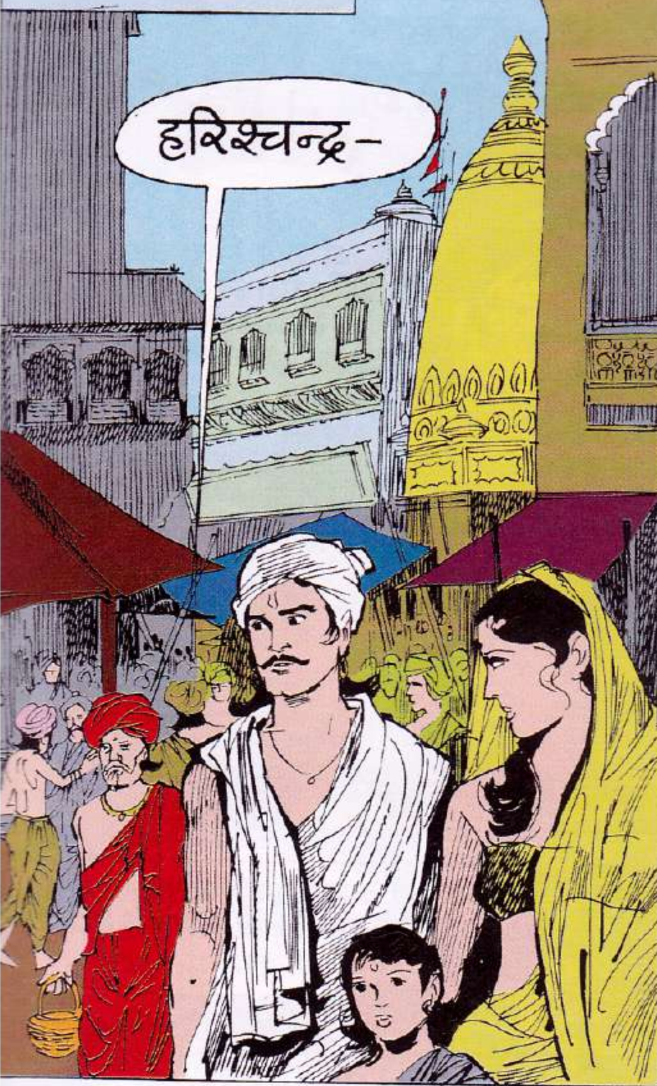


गंगा के किनारे वाराणसी के भव्य मन्दिर दिखायी देने लगे। थके-हारे राजा अपने परिवार सहित एक मन्दिर में गये।













सूरज कुछ घण्टों बाद डूबेगा! मैं दक्षिणा कैसे चुकाऊँगा?

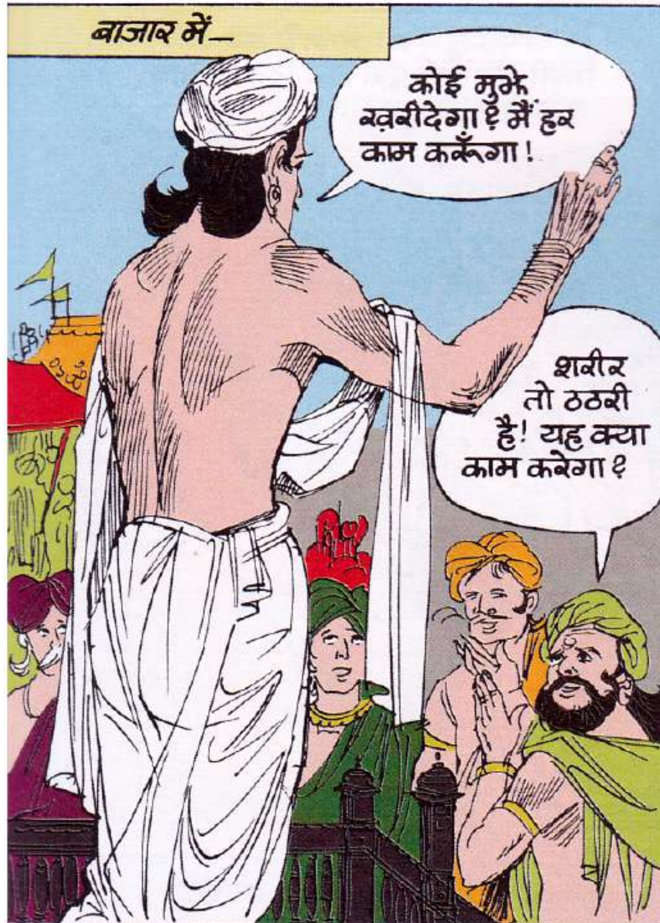
राजकुमार रोहिताश्व बहुत साहसी था। दर-दर भटकने के कष्टों को उसने अपने माता-पिता के साथ हँसते-हँसते झेला था, परन्तु उस कोमल शरीर में और सहने की शक्ति नहीं रही थी!



कुछ घंटों के बाद राजा हरिश्चन्द्र लौटे। उन्हें काम नहीं मिला था।






बाजार में–
कोई मुझे ख़रीदेगा? मैं हर काम करूँगा!
शरीर तो ठठरी है! यह क्या काम करेगा?


हताश राजा ने अनेक व्यक्तियों से प्रार्थना की–
कृपया मुझे ख़रीद लीजिये!
नहीं, तुम दुर्बल दिखायी देते हो!


मुझे स्वयं को बेचना ही चाहिये–बेचना ही चाहिये!

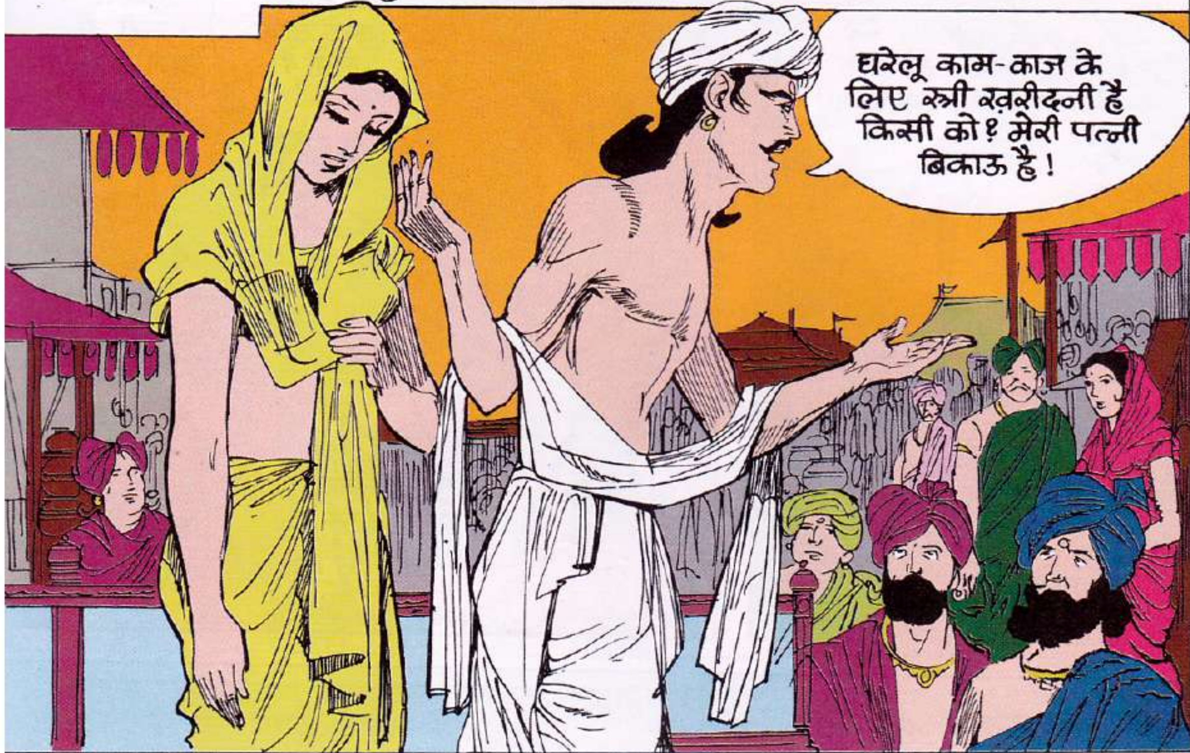

हरिश्चन्द्र तमतमाती धूप में खड़े थे और बराबर यही कहे जा रहे थे–
मुझे ख़रीद लीजिये!
तुम्हें कोई नहीं ख़रीदेगा! तुम्हारी पत्नी को घर के काम-काज के लिए भले ही कोई ले ले!


महारानी शैव्या ने यह बात सुन ली। वे अपने पति के पास आयीं---
आपको कोई नहीं लेगा! परन्तु आपके पास बेचने को एक चीज़ और भी है!
क्या मतलब?

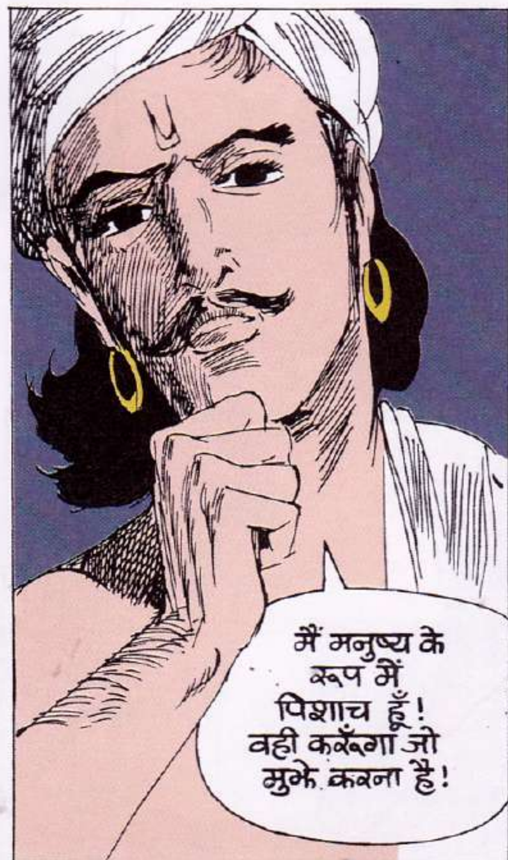

आपके पुत्र को जन्म दे कर मैंने पत्नी का धर्म पूरा कर दिया! आप मुझे बेच कर अपना ऋण चुका दीजिये!
यह तुम क्या कह रही हो? मैं पत्नी को बेचूँ?


सत्य मनुष्य से अधिक मूल्यवान है! आप सत्य की रक्षा कीजिये! मुनिवर की बात याद है?
हाँ, याद है!

हरिश्चन्द्र मन मार कर बाज़ार गये। वे नीलाम के चबूतरे पर जा खड़े हुए। बहुतसे लोग वहाँ जमा हो गये।





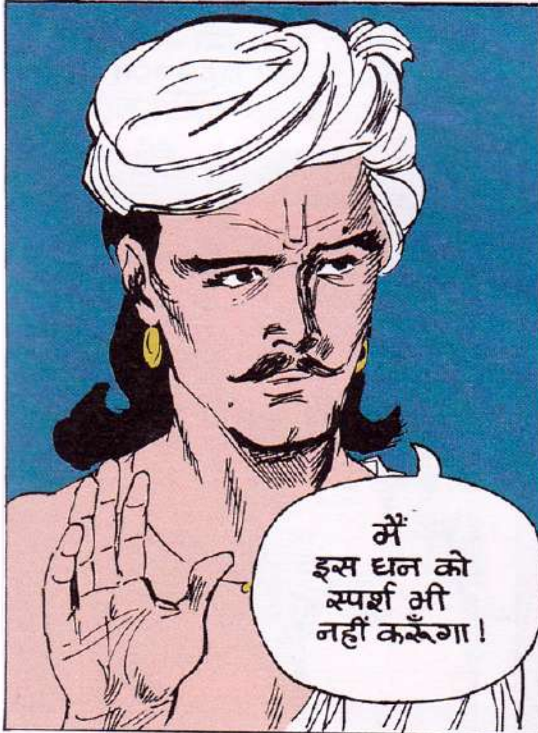


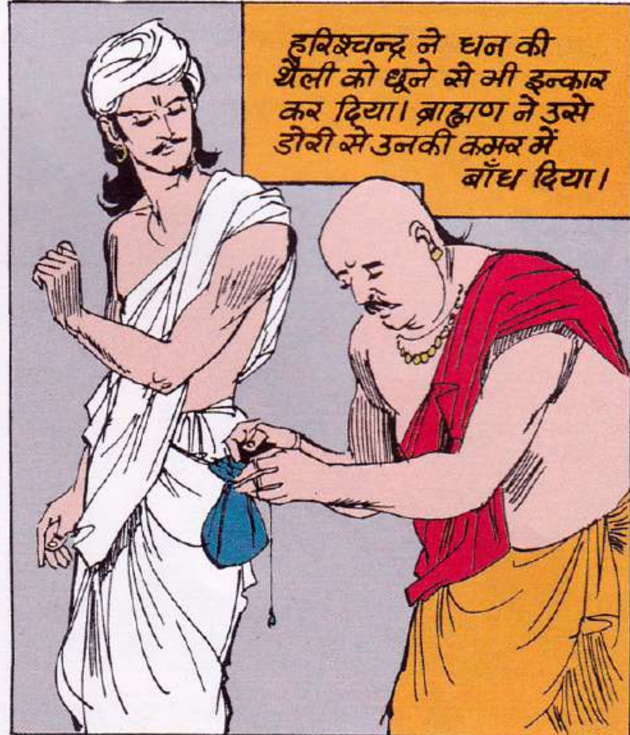

एक ब्राह्मण रानी को ख़रीदने को राज़ी हो गया–
मैं इसे ख़रीदूँगा!


आप इससे क्या काम लेंगे?
अपनी पत्नी की दासी बनाऊँगा। क्या मूल्य है?


कोई मनुष्य अपनी पत्नी का, अपने पुत्र की जननी का मूल्य कैसे आँक सकता है?

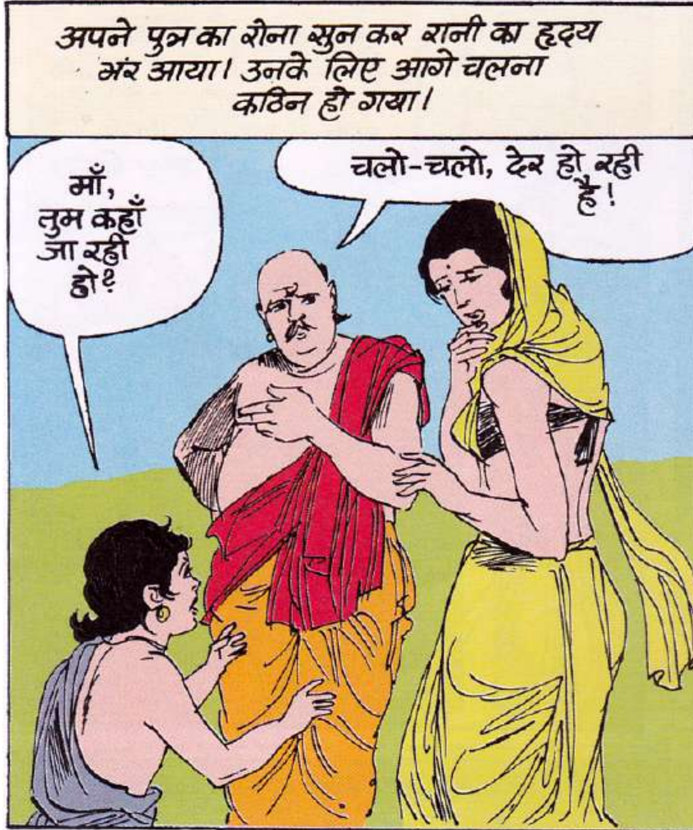

ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुआ! उसने सोचा, मनमाने मूल्य में खरीद लूँगा!
तो ये पाँच सौ स्वर्ण-मुद्राएँ लो। अब तुम्हारा इस स्त्री पर कोई अधिकार नहीं!





अपनी माता को ब्राह्मण के साथ जाते देख कर रोहिताश्व व्यथित हो उठा। वह रोता हुआ माता के पीछे भागा।




अपने पुत्र का रोना सुन कर रानी का हृदय भर आया। उनके लिए आगे चलना कठिन हो गया।
माँ, तुम कहाँ जा रही हो?
चलो-चलो, देर हो रही है!


कृपया मुझे इसे साथ ले लेने दीजिये! यह मुझसे बिछड़ कर जीवित नहीं रहेगा!


ब्राह्मण प्रसन्न हुआ कि लड़का भी मिल रहा है। उसने रोहिताश्व का भी कुछ मूल्य चुका दिया।
ढाई सौ स्वर्ण-मुद्राएँ और! मैं लड़का भी ख़रीद लेता हूँ!
पुत्र भी!

ब्राह्मण हरिश्चन्द्र की पत्नी और पुत्र को खरीद कर ले जा रहा था और वे लाचार खड़े देख रहे थे!



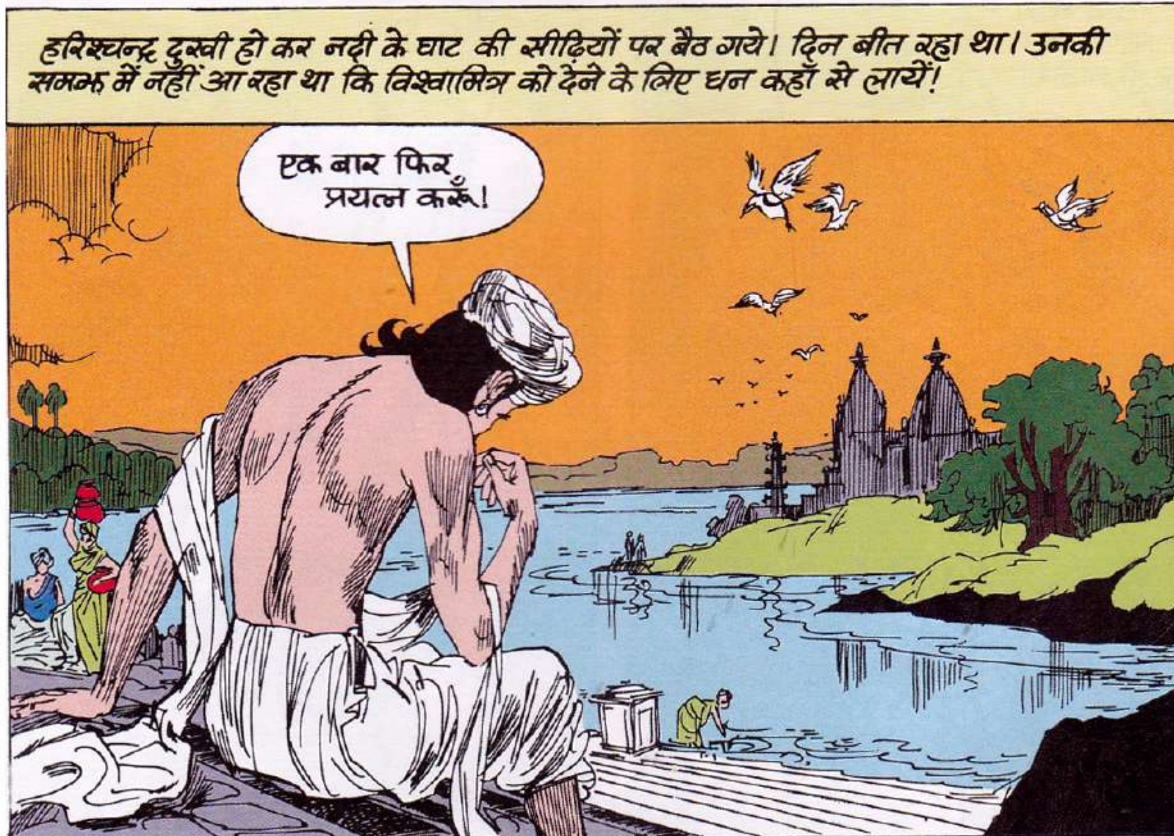


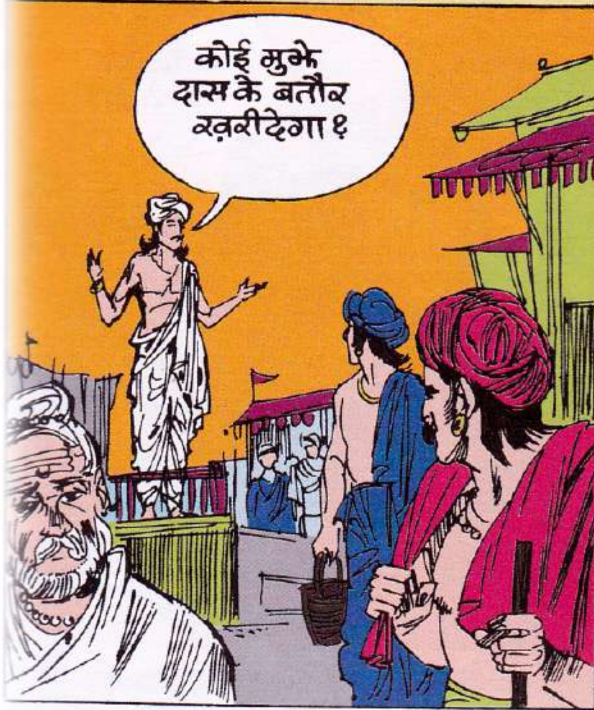






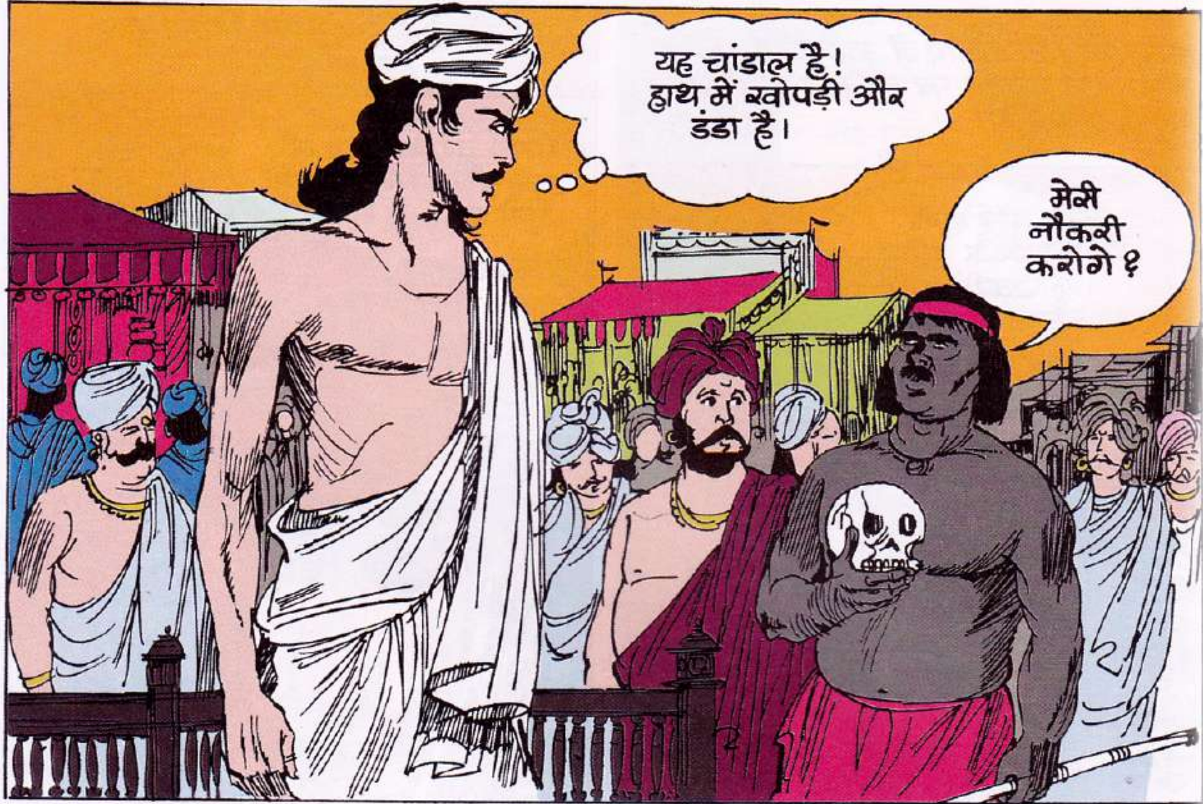
हरिश्चन्द्र दुखी हो कर नदी के घाट की सीढ़ियों पर बैठ गये। दिन बीत रहा था। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि विश्वामित्र को देने के लिए धन कहाँ से लायें!




हरिश्चन्द्र फिर बाज़ार में आये और नीलामी के चबूतरे पर जा खड़े हुए। इस बार वे अकेले थे!
कोई मुझे दास के बतौर ख़रीदेगा?


लोगों ने उन्हें पहचान लिया। कुछ हँस भी दिये!
पत्नी को बेच कर भी तुम्हारी धन की लालसा पूरी नहीं हुई?
नहीं!
किन्तु जो तुम्हें ख़रीदेगा उस पर तुम बोझ बन जाओगे!


कोई उन्हें ख़रीदने को तैयार न था। स्मशान का रखवाला चाण्डाल यह सब देख रहा था।
मैं वैसे शक्तिवान हूँ—किन्तु कुछ दिन से भोजन नहीं किया है! कौन ख़रीदेगा मुझे?
तुम्हें बिकना ही है तो मैं ख़रीद लूँगा!

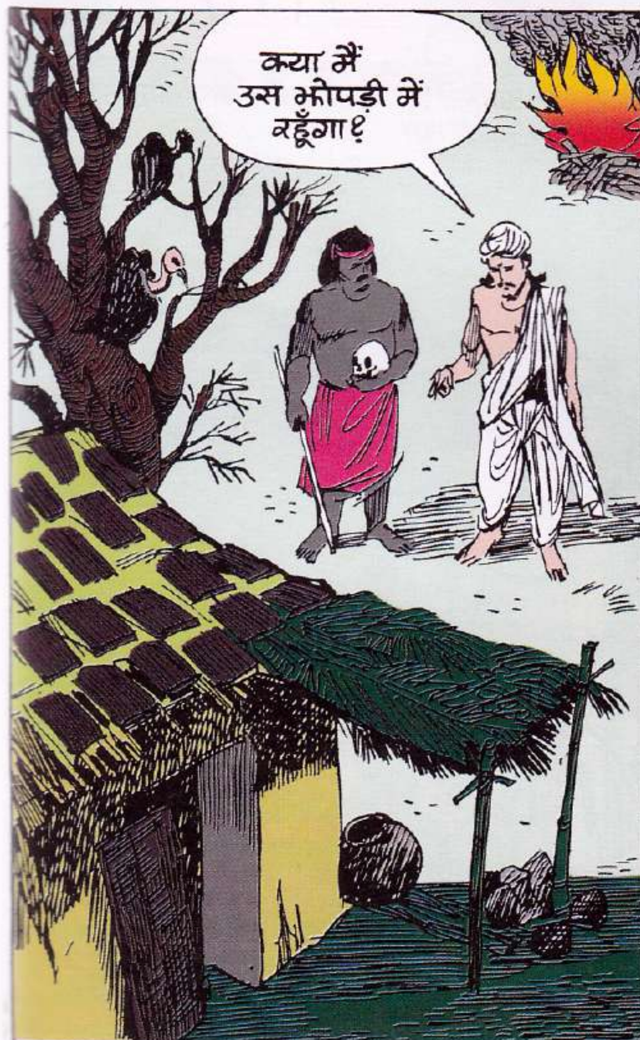

यह चांडाल है! हाथ में खोपड़ी और डंडा है।
मेरी नौकरी करोगे?


क्या मैं इतना दीन-हीन हो गया कि चांडाल का नौकर बनूँ!


परन्तु और कोई उपाय न था। दिन ढलने वाला था और विश्वामित्र दक्षिणा की शेष राशि लेने आने वाले थे!
मुझे ढाई सौ स्वर्ण-मुद्राएँ देनी होंगी!
दूँगा- मेरे साथ चलो!

विश्वामित्र को दक्षिणा दे कर हरिश्चन्द्र अपने नये स्वामी के साथ चले गये---



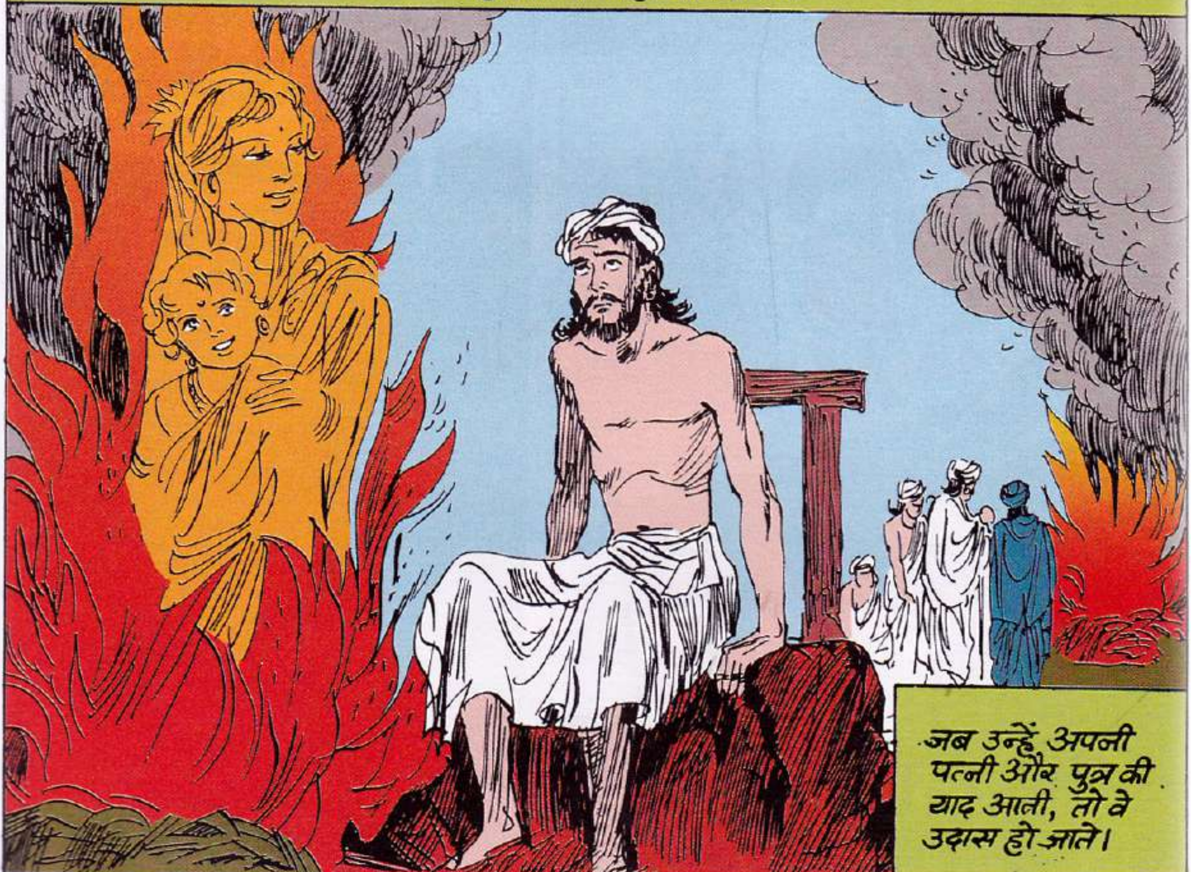




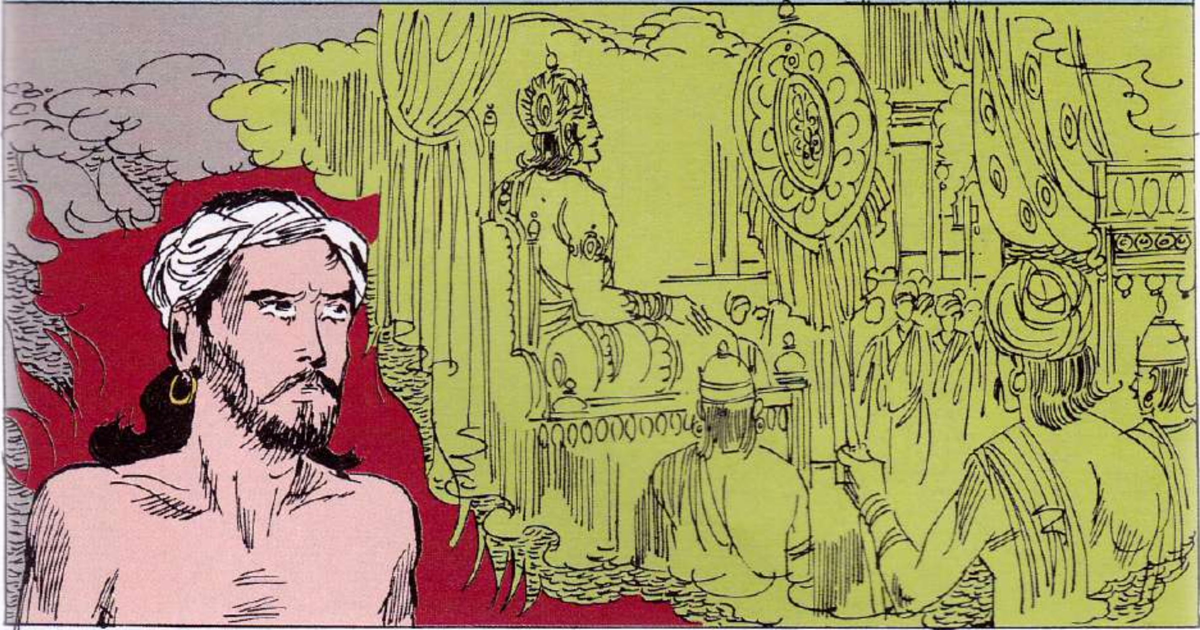




इस स्थान और आग की लपटों के प्रभाव से उनकी आकृति ही बदल गयी। अब कोई उन्हें पहचान भी नहीं सकता था।



दिन बीत रहे थे– राजा अपना काम कर रहे थे। स्मशान में शव जलते थे– गर्मी और धुँए से उनकी आँखों में पानी आ जाता था– कभी कभी बीते दिनों की याद आ जाती थी।



सोते समय, ठाठ से बिस्तर पर सोते हुए पुत्र की याद आती। बीते दिन न जाने कहाँ छूट गये थे।

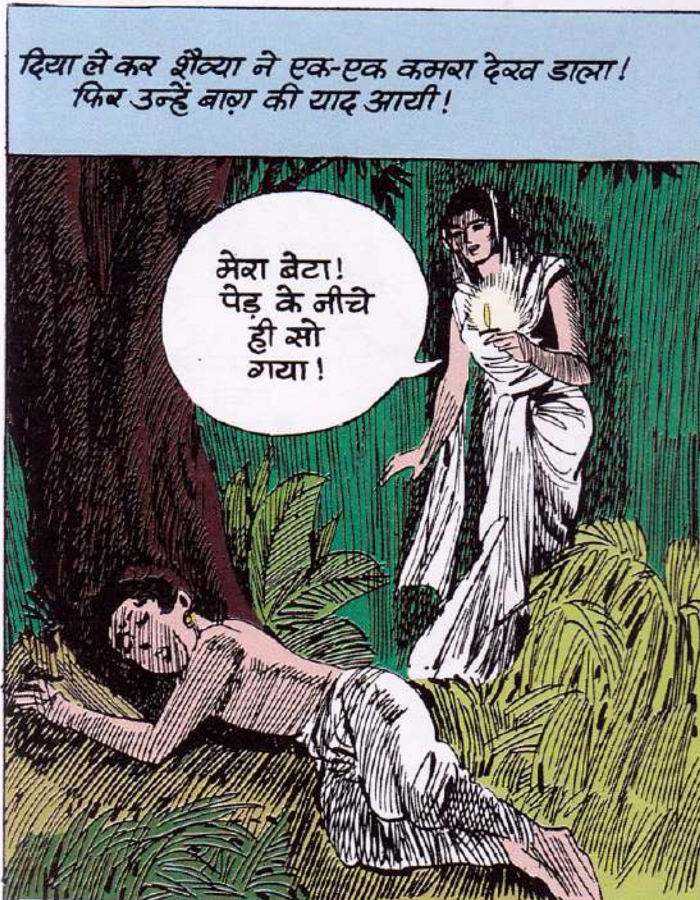


उधर रानी दिन-रात ब्राह्मण के घर काम में जुटी रहती थीं।




बाग़ में जा कर खेल लेना।
जाता हूँ, माँ।


रानी दिन भर काम कर के रात को सोने गयीं तो देखा कि रोहिताश्व कमरे में नहीं था।
कहाँ गया? क्या हो गया उसे?


दिया ले कर शैव्या ने एक-एक कमरा देख डाला! फिर उन्हें बाग़ की याद आयी!
मेरा बेटा! पेड़ के नीचे ही सो गया!


इसका शरीर तो ठण्डा है! ये निशान कैसे? मेरा बेटा! साँप ने डस लिया!

उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। बेटे का शव ले कर घर में आयीं और ब्राह्मण को जगाया।

मेरा पुत्र मर गया है! इसके क्रिया-कर्म के लिए कुछ पैसा दीजिये!

पैसा? तुम्हें दो जून रोटी देते हैं यह क्या कम है?

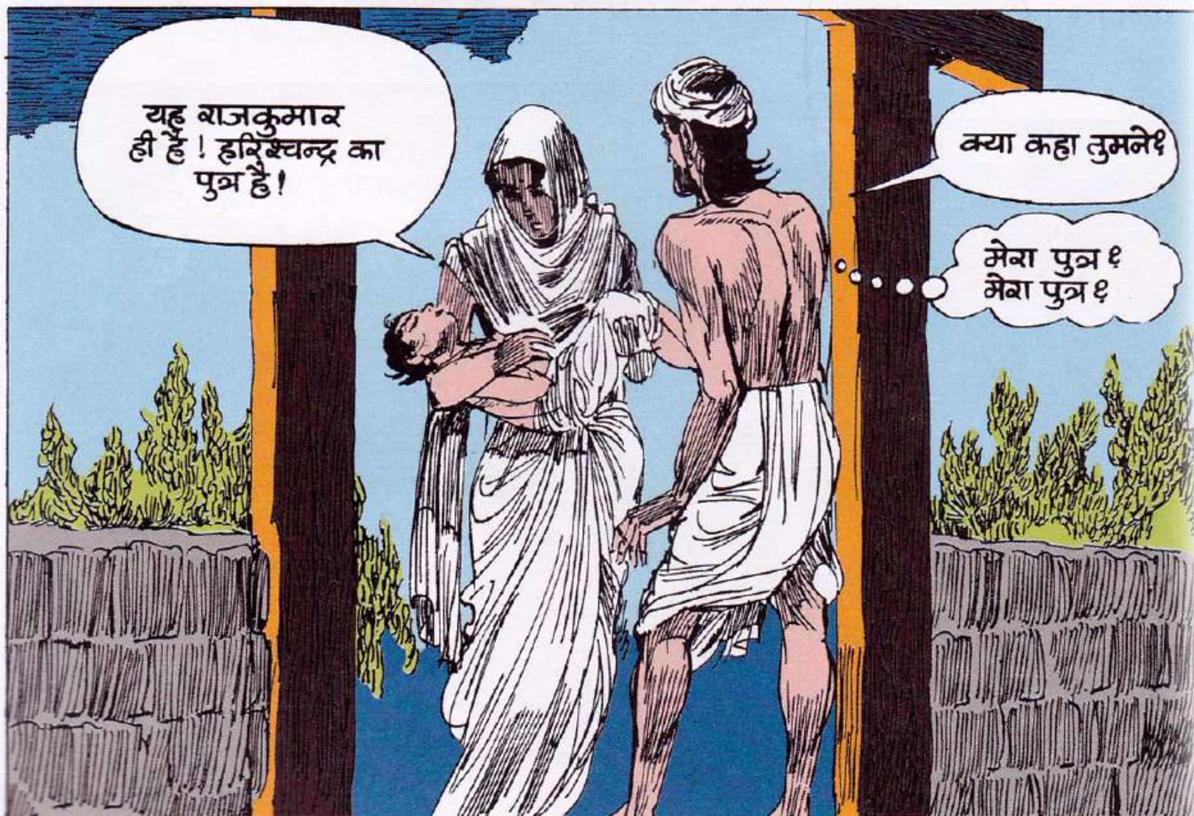







तभी हरिश्चन्द्र की दृष्टि शव के मुख पर पड़ी–
ठहरो!


बालक का मुख राजकुमारों जैसा है! यह कौन है?
मेरे हृदय में यह धड़कन क्यों?


यह राजकुमार ही है! हरिश्चन्द्र का पुत्र है!
क्या कहा तुमने?
मेरा पुत्र? मेरा पुत्र?

शैव्या यह स्वर सुन चौंक पड़ीं! स्वर पहचाना हुआ था! उन्होंने दाढ़ी-वाले मुरझाये चेहरे को ध्यान से देखा।











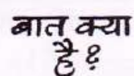
तभी अनहोनी-सी हुई— एक हाथ ने उन्हें कपड़ा लेने से रोक दिया!



उन्होंने घूम कर देखा तो चाण्डाल खड़ा हुआ मुस्करा रहा था।



चाण्डाल के उत्तर देने से पहले ही वहाँ एक दिव्य घटना घटी। देवता लोग स्वर्ग से उतर आये थे!



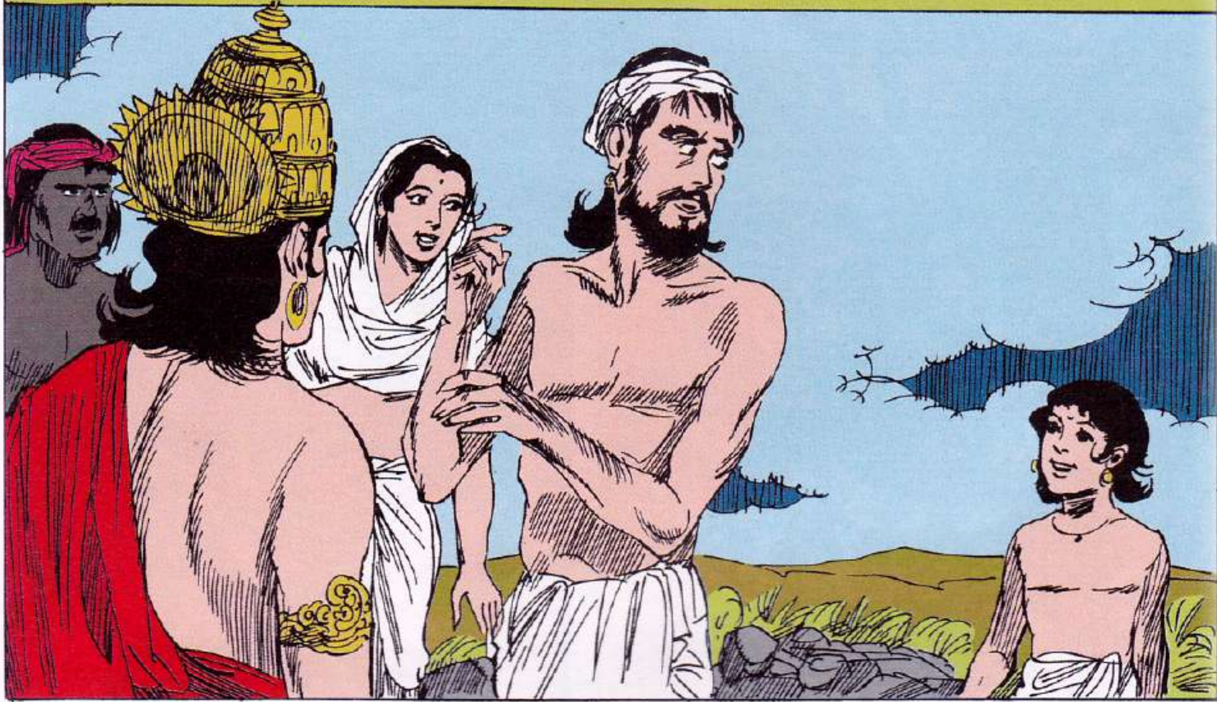
देवताओं के राजा, इन्द्र आगे आये...

हरिश्चन्द्र, हम सत्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा की परीक्षा ले रहे थे! तुम उसमें सफल रहे!

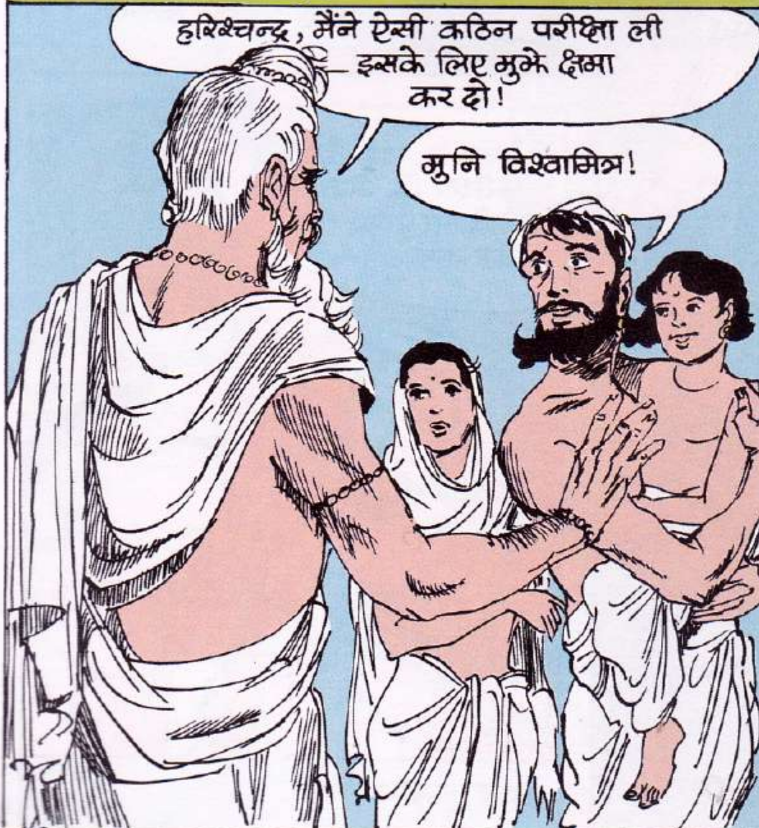


इन्द्र मुस्करा दिये...

इन्द्र को मुस्कराता देख कर हरिश्चन्द्र ने उधर देखा जिधर उनके पुत्र का शव रखा था... वे चकित हो गये... रोहिताश्व खड़ा मुस्करा रहा था!



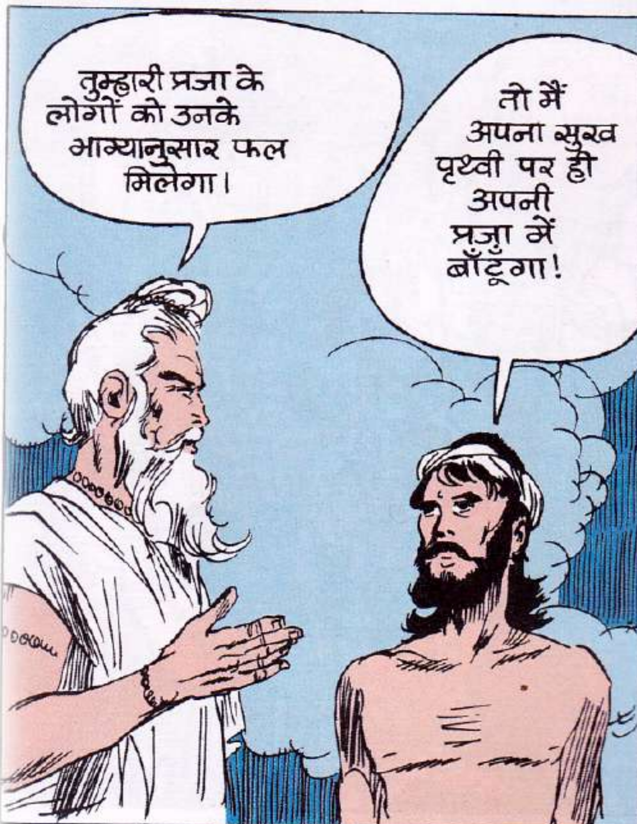
तभी किसी ने उन्हें पुकारा—

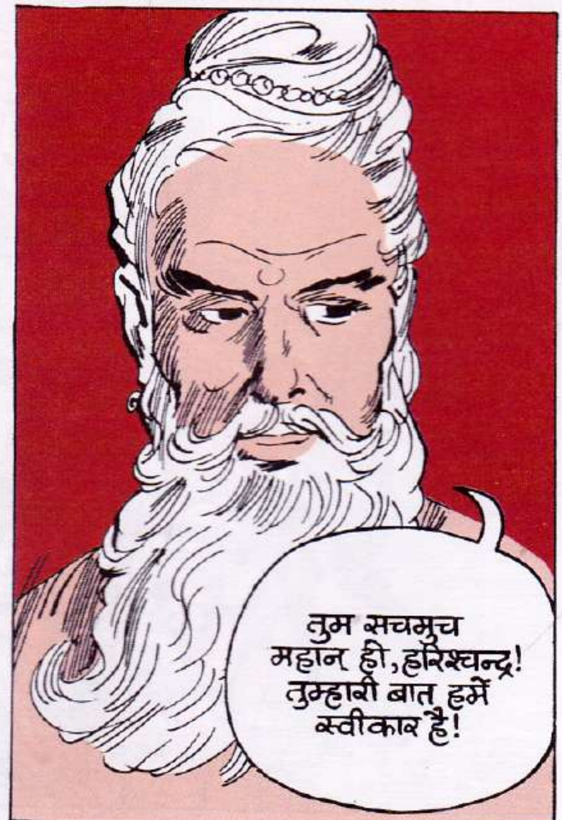





नहीं हरिश्चन्द्र, तुम स्वाधीन हो! स्वयं धर्मराज यम ने चाण्डाल का रूप धारण किया था!


तुमने अपनी सत्यवादिता प्रमाणित कर दी! तुम स्वर्ग के अधिकारी हो!
मैं अपनी प्रजा के बिना स्वर्ग नहीं जाऊँगा!


तुम्हारी प्रजा के लोगों को उनके भाग्यानुसार फल मिलेगा।
तो मैं अपना सुख पृथ्वी पर ही अपनी प्रजा में बाँटूंगा!


तुम सचमुच महान हो, हरिश्चन्द्र! तुम्हारी बात हमें स्वीकार है!

अयोध्या में समाचार फैल गया कि राजा वापस आ रहे हैं। लोग उनका स्वागत करने के लिए घरों से निकल पड़े...



प्रजा सड़क पर उमड़ पड़ी! बहुत से लोग प्रसन्नता के मारे रो रहे थे! उनके बिछड़े हुए प्यारे राजा वापस आ रहे थे।

देखो— आगे अश्वारोही रजकुमार हैं।

राजा हरिश्चन्द्र अमर रहें!

हरिश्चन्द्र

इस अति सम्माननीय राजा से देवता भी प्रभावित थे। भाग्य ने उनसे उनका राज्य, वैभव, पत्नी और पुत्र सब कुछ छीन लिया था। विपत्तियों की झड़ी लगी रही फिर भी हरिश्चंद्र ने सत्य का मार्ग नहीं त्यागा। एक महान राजा का परिचय देते हुए उन्होंने दृढ़ निश्चय के साथ अपनी और अपने परिवार के सम्मान की रक्षा की।

ISBN 978-81-8482-2[illegible]

